No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system without priory written permission from the publisher.

ISBN- 978-93-87195-19-6

Publication Year - 2018

Copyright - Publishers

Price- Rs. 850/-

Published by
Virendra N tiwari
Shivalik Prakashan
27/16, Shakti Nagar, Delhi-110007
011-42351161
Email- shivalikprakashan@gmail.com

Association With
Modern Department
Rashtriya Sanskrit Sansthan
(Deemed University)
Guruvayur Campus , Puranattukara, Thrissur
Kerala - 680551

POTPOURRI
Chief Editor- Dr. S.V. Ramana Moorthy

POTPOURRI 2017

DEPARTMENT OF MODERN SUBJECTS

GURUVAYOOR CAMPUS, PURANATTUKARA, THRISSUR - 680 551, KERALA

ISBN

CONTENTS

1. Modern Trends in Indian English Writing 9
Dr. S.V.R. Murhty

2. हिंसा का उदारीकरण और वर्तमान कविता 13
प्रो. बी.जी.गोपालकृष्णन

3. പരിസ്ഥിതി ദർശനം - മലയാളകവിതയിൽ 20
ശ്രീമതി. കെ. എ. ജെസ്സി

4. वास्तुशास्त्र के मूल सिद्धान्त 31
Dr. Sunita

5. Technology as an Effective and Holistic method to Maximize Learning potential in the area of Sanskrit and English Languages : 41
Dr. M.K. Sheeba

6. Significance of Folklore as the Source of History 47
Dr. Anto Florance.P.

7. Current Trends in Software Engineering Research 53
Smt. Manichithra P.S.

8. Current & Future Trends And Challenges in Physical Education and Sports Sciences 58
Sreejish P.M

9. Computing as a service over the Internet - Cloud Computing 63
Smt. Nisha Vinod

हिंसा का उदारीकरण और वर्तमान कविता

वी.जी.गोपालकृष्णन
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय, कालटी, केरल – 683 574.
09446358534. veejigopal@gmail.com

यह नवउपनिवेशन का दौर है। इस दौर में वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, बाज़ारीकरण आदि के गुणभोक्ता समाज का धनी वर्ग है। यह वर्ग दिन दुगुना रात चौगुना की दर से मुनाफा आर्जित करना चाहता है। इसके लिए किसी भी हथकंडे को अपनाने के लिए वह हिचकता नहीं है। दूसरी ओर धनीवर्ग की पक्षधर नीतियों के खिलाफ उभरने वाले असंतोष एवं आक्रोश को कुचलने का अवसर भी वह छोड़ता नहीं। मोटे तौर पर हिंसा, भय, आतंक, नृशंसता, हत्या आदि का प्रश्रय लेकर वैश्वीकरण को थोपने का प्रयास जारी है। वैश्वीकरण के गुणभोक्ता के रूप में राजनीति एवं धर्म की सत्ता भी उपस्थित है। दोनों सत्ताएँ इसके लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही हैं। इस प्रकार पूरे देश में हिंसा का भी उदारीकरण एवं वैश्वीकरण हो रहा है। माफिया संस्कृति की बढ़त से आतंकित भारतीय समाज की अभिव्यक्ति नवउपनिवेशी दौर की हिन्दी कविता में पायी जाती है। वित्त पूँजी के साथ राजनीतिक एवं धार्मिक नेतृत्व का जो साँठ-गाँठ है उसको समाज के सामने खोलकर दिखाने का महत्वपूर्ण कार्य वर्तमान कविता कर रही है।

वैश्वीकरण के तत्व लूट की सारी साज-सज्जा के साथ उपस्थित हैं। जल, ज़मीन, जंगल समेत सारी संपत्ति को हथियाने की यात्रा में एक युद्ध की तैयारी ही दिखाई देती है। विरोध के किसी भी संदर्भ को जड़ से ही वे उन्मूलन करना चाहते हैं। इसके लिए पुलिस, सेना एवं माफिया गिरोह उनके साथ हाज़िर होते हैं। 'यथार्थ इन दिनों' शीर्षक कविता में मंगलेश डबराल ऐसे लूटेरे तत्वों की भयानक हिंसात्मकता को यों अभिव्यक्त करते हैं – "यथार्थ इन दिनों इतना चौंधियाता हुआ है/ कि उससे आँखें मिलाना मुश्किल है/ मैं उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ता हूँ/ तो वह एक हिंस्र जानवर की तरह हमला करके निकल जाता है"[1]। देश की प्राकृतिक संपदा को लूटने के लिए निकली नवउपनिवेशी ताकतों के हिंस्र स्वरूप को कवियों रेखांकित करते हैं – "हिंस्र पशुओं से भरी हुई रात चारों ओर इकट्ठा हो रही है/

ISBN:

POTPOURRI पोटपूरी

പോട്പൂരി

DEPARTMENT OF MODERN SUBJECTS

Guruvayoor Campus, Puranattukara,
Thrissur, Kerala - 680 551

RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN

DEEMED UNIVERSITY

(Under Ministry of Human Resource Development, Govt.of India)